International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 24-25

डॉ. खूबचंद बघेल का सामाजिक सुधार में योगदान

दुर्गेश कुमार[1], डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति[2]
[1] शोधार्थी, विभाग हिंदी, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
भारत जैसे बहुधार्मिक और बहुजातीय देश में सामाजिक एकता और सुधार की परंपरा प्राचीन काल से रही है। जब–जब समाज में असमानता, अंधविश्वास, अन्याय और भेदभाव बढ़ा, तब–तब समाज सुधारक व्यक्तित्वों ने जन्म लिया। छत्तीसगढ़ की पवित्र भूमि में जन्मे डॉ. खूबचंद बघेल ऐसे ही महान समाज सुधारक थे जिन्होंने अपने जीवन को जनजागरण, समानता और राष्ट्रीय चेतना के लिए समर्पित किया। सन 1900 में रायपुर जिले के पथरी गाँव में जन्मे डॉ. बघेल ने चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी डॉक्टर का पेशा छोड़कर समाज सेवा और स्वतंत्रता संग्राम का मार्ग चुना। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों जैसे— जातिवाद, छुआछूत, असमानता और नारी उत्पीड़न के विरुद्ध डटकर संघर्ष किया। "पंक्ति तोड़ो आंदोलन" के माध्यम से उन्होंने जातिगत भेदभाव को चुनौती दी और "भारतवंशी जातीय सम्मेलन" आयोजित कर सामाजिक एकता का संदेश दिया।
महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए उन्होंने "किसबिन नाच" जैसी प्रथाओं पर रोक लगवाई और महिला सशक्तिकरण के पक्ष में आंदोलन चलाया। सामाजिक विषमता के विरोध में उन्होंने अपने परिवार तक के विरोध को झेला, किन्तु अपने सिद्धांतों से कभी पीछे नहीं हटे। उन्होंने अपने समाज में अध्यक्षीय भाषणों के माध्यम से दहेज, शराबखोरी और आर्थिक असमानता जैसी बुराइयों को दूर करने की प्रेरणा दी।
डॉ. बघेल के कार्य केवल सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं थे; उन्होंने शिक्षा, कृषि, राजनीति और सांस्कृतिक जागृति के क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने छत्तीसगढ़ की अस्मिता और लोकसंस्कृति के संरक्षण को अपना कर्तव्य माना।

मूल शब्दः सामाजिक, असमानता, अंधविश्वास, छुआछूत, सामाजिक जागरूकता, कुप्रथा

भारत में अनेक जाति धर्म को मानने वाले लोग निवास करते हैं। विविधता में एकता भारत की विशेषता है। यहां समाज सुधार की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। जब–जब समाज में सामाजिक विषमता, भेदभाव, अंधविश्वास, अशिक्षा, अन्याय आदि बढ़ा तब–तब छत्तीसगढ़ की पावन धरती में अनेक देशभक्त, तपस्वी व समाज की कुरीतियों को दूर करने वाले महान विभूतियों का जन्म हुआ। ऐसे ही क्रांतिकारी जो अपने कर्मों से छोटे से गाँव में जन्म लेकर भारतवर्ष में प्रख्यात हुए डॉ. खूबचंद बघेल, सामाजिक प्रहरी के रूप में प्रसिद्ध हुए। अपने निष्ठा व लगन, कठिन प्रयत्न से स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लोगों में जन चेतना का भाव भरकर सामाजिक जागरूकता का अलख जगाने का पुनीत कार्य किया। समाज में व्याप्त छुआछूत, जातिगत ईर्ष्या– द्वेष, जात–पात आदि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए कठिन संघर्ष किया। सामाजिक बहिष्कार का परवाह किए बिना सामाजिक सुधार के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। वे केवल समाज सुधार ही नहीं किया बल्कि शिक्षा, कृषि, राजनीतिक क्षेत्र आदि में भी सुधार के लिए योगदान दिया। अपना जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

डॉ. खूबचंद बघेल का जीवन परिचय

डॉ. खूबचंद बघेल का जन्म छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के अंतर्गत आने वाली रेलवे स्टेशन सिलयारी के पास का गाँव पथरी में 19 जुलाई सन 1900 को हुआ। इनके पिता का नाम जुड़ावन प्रसाद एवं माता का नाम केकती बाई था। इनके परिवार से आठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुए। खूबचंद बघेल का विवाह लगभग 10 वर्ष की उम्र में उनसे 3 वर्ष उम्र में छोटी राजकुँवर से हुआ। तीन पुत्री जन्म के बाद कोई पुत्र नहीं होने पर डॉ. भारत भूषण बघेल को गोद लिया। गाँव से पहली बार पढ़ने के लिए रायपुर गए, फिर वहां 1920 में मेडिकल की पढ़ाई के लिए नागपुर के रॉबर्टसन मेडिकल कॉलेज में शिक्षा ग्रहण किया। उसी समय सन 1920–21 में अंग्रेजी शासन के विरोध में असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर बघेल ने डॉक्टरी की पढ़ाई अधूरा छोड़कर आंदोलन में सक्रिय हो गए। परिवार वालों के समझाने पर बाद में अपनी अधूरी पढ़ाई पुन: प्रारंभ कर सन 1923 में एल.एम.पी. परीक्षा उत्तीर्ण किया। बाद में सरकार ने उस परीक्षा का नाम बदलकर एम.बी.बी.एस. कर दिया। "चिकित्सा के क्षेत्र में करियर बनाने के बजाय उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र सेवा और समाज सुधार के लिए समर्पित करने का निर्णय लिया।"[1] इस तरह समाज सेवा का कार्य उन्होंने आजीवन किया। जहां भी समाज में सामाजिक बुराई देखता उसे दूर करने के लिए लग जाते। अपने दृढ़ संकल्प से सामाजिक बुराई को दूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ते, चाहे उनका परिणाम स्वयं को भुगतना पड़ता। कई बार अपने अपने बिरादरी से ही संघर्ष करना पड़ा। "जातिगत भेदभाव, कुरीतियों को मिटाने वाले इस महान व्यक्ति का निधन संसद के शीतकालीन सत्र के लिए भाग लेने दिल्ली गए हुए थे वहाँ दिल का दौरा पड़ने से उनकी आकस्मिक निधन 22 फरवरी 1969 को हो गया।"[2]

डॉ. खूबचंद बघेल का सामाजिक सुधारो में योगदान

खूबचंद बघेल स्वभाव से स्वच्छंद प्रिय व अन्याय के खिलाफ थे। उस समय समाज में जात–पात, छुआछूत, ऊंच–नीच, असमानता व्याप्त था। समाज में एक जाति के लोग दूसरे जाति खासकर अपने से कमजोर समझने वाली जातियों के लोगों से उचित व्यवहार नहीं करते थे। उनकों सामाजिक दृष्टि से कमजोर समझ जाता था। इस तरह लोग अपने स्वार्थ पूर्ति में लगे हुए थे। इस स्थिति को देखकर खूबचंद बघेल ने सामाजिक उत्थान के लिए अनेक प्रयास किया।

सामाजिक बहिष्कार

खूबचंद बघेल सामाजिक समता के पक्षधर थे। उस समय समाज में अनेक बुराई व्याप्त था। स्वयं अपने समाज में व्याप्त

उपजातिगत भेदभाव को देखकर बहुत दु:खी हुआ। सामाज की जातिगत असमानता को दूर करने के लिए पहल किया। ऐसे समय में डाक्टर खूबचंद बघेल ने समझा कि आपसी एकता बहुत जरुरी है। इसके लिए क्रांतिकारी कदम भी जरुरी है। उन्होंने अपनी बिटिया राधा का ब्याह दिल्लीवार समाज के कलाप्रेमी युवक से करना तय किया। विरोध की तरह विरोध हुआ मगर अंततः राधा और रामचंद्र की शादी हो गई। यह मनवा समाज की बेटी और दिल्लीवार समाज के बेटे का प्रथम परिणय था। हल्ला मचा और मनवा समाज ने डाक्टर साहब को दंडित कर दिया। पंगत में खाना खाने के बाद स्वयं पत्तल उठाकर डाक्टर साहब ने सामाजिक न्याय का लगातार बारह वर्षों तक सम्मान करने का कीर्तिमान रचा। फिर वे अखिल भारतीय कुर्मि समाज के अध्यक्ष हुए। आँखें खुलीं। तनी हुई भृकुटी का ढंग बदला। समाज के कट्टरपंथी नरम पड़े। डाक्टर साहब पर फूलों की वर्षा हुई। समाज ने उन्हें अपना गौरव कहा। अब वे समाज के क्रांति दृष्टा महापुरुष हैं। और फिरकों की दीवारें अब पूरी तरह तरह टूट चुकी हैं।"[3] कमल नारायण शर्मा लिखते हैं "डाक्टर साहब कुर्मि ममाज के ही नेता नहीं थे बल्कि त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह के बाद वे ही छत्तीसगढ़ के ऐसे माटी पुत्र थे जिन्हें सबका सम्मान प्राप्त था। डाक्टर साहब की मध्यप्रदेश के दो मुख्यमंत्रियों के साथ टकराहट हुई। दोनों समर्थ और शक्तिमान मुख्यमंत्री थे। लेकिन डाक्टर साहब सदैव अपनी पक्षधरता को लेकर सचेत रहे। सुविधा और पद से उन्हें विचलित नहीं किया जा सका।"[4]

पंक्ति तोड़ो आंदोलन

छत्तीसगढ़ी समाज में एक सामाजिक कुप्रथा उस समय प्रचलित था। शादी जैसे सामाजिक अवसरों पर समाज के आधार पर पंक्ति निर्धारित होता था। उसी समाज के व्यक्ति उस पंक्ति में बैठकर खाना खा सकता था, अन्य समाज की पंक्ति में बैठकर खाना सामाजिक अपराध माना जाता था। "यह व्यवस्था डॉ. खूबचंद बघेल को भेदभावपूर्ण लगी और उन्होंने इसे तोड़ने के लिए श्पंक्ति तोड़ोश आंदोलन चलाया अर्थात् कोई व्यक्ति किसी के भी साथ एक पंक्ति में बैठकर भोजन कर सकता है। जाति के आधार पर पंक्ति नहीं होनी चाहिए। श्पंक्ति तोड़ोश आंदोलन में वे सफल रहे।"[5]

किसबिन नाच पर प्रतिबंध

किसबिन नाच किसबा जाति के द्वारा किया जाता था। उस जाति के लोग अपने परिवार की महिलाओं से त्योहारों में नचाने और गीत गवाने का काम करवाते थे। समाज में इस तरह से महिलाओं द्वारा किया जाने वाला रीवाज को बंद करवाने और उस जाति में जगरूकता लाकर मुख्यधारा से जोड़ने के लिए बघेल जी ने एक सममेलन कराया "डॉ. बघेल जी द्वारा समाज सुधार की दृस्टि से "भारतवंशी जातीय सम्मलेन" का आयोजन मुंगेली में कराया गया जिसका असर किसबा जाति पर पड़ा और वे सब सामाजिक मुख्य धारा में लौट आये।"[6]

छुआछूत का विरोध के लिए नाटक

1933 में महात्मा गांधी का रायपुर जिले में दौरा हुआ। सप्रे हाई स्कूल मैदान में गांधी जी ने युवकों को प्रेरणा देते हुए कहा "अस्पृश्यता जिन्दा रही तो हिन्दू धर्म मरेगा और हिन्दू धर्म को जीवित रखना हो तो अस्पृश्यता को मिटाना पड़ेगा।"[7] इससे प्रेरित होकर सेठ अनंतराम बर्छिहा ने सामाजिक असमानता को दूर करने के लिए समाज से वंचित लोगों का सहयोग किया जिसके कारण गाँव में सेठ अनंतराम के खिलाफ स्थित निर्मित हो गई। सभी सहयोग करना बंद कर दिया। इसी समय खूबचंद बघेल ने मध्य प्रदेश हरिजन सेवक संघ का मंत्री नियुक्त हुआ और सुंदरलाल शर्मा के साथ बर्छिहा जी के गाँव का दौरा किया। वहां जाने पर यह बात पता चला उनके स्वजातीय ने उनको छोड़ दिया है और भविष्य उनकी बेटी की शादी होने वाली थी। इसको देखते हुए "नाटक की रचना हुई चन्दखुरी ग्राम में शादी के समय। इस नाटक को मंच पर खेलने का तय किया गया। श्री शुक्ल जी, महंत जी की उपस्थिति में यह नाटक चन्दखुरी ग्राम में सन् 1936 में खेला गया। जिन लोगों ने बहिष्कृत किया था वे इस नाटक को देखने चन्दखुरी आये और सेठजी के विवाह कार्य में बिना किसी प्रकार की आपत्ति किये सम्मिलित हुये। सेठजी के प्रति तिरस्कार का सारा भाव सत्कार में परिणित हो गया।"[8]

अध्यक्षीय भाषण

अपने समाज में अध्यक्ष के रूप में चुने जाने पर समाज की विषमता को दूर करने के लिए बघेल ने समाज में समानता लाने के लिए अध्यक्ष के रूप में भाषण देते हुए कहा था "सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये हमें मनोवैज्ञानिक तरीके इस्तेमाल करना चाहिये। दहेज की प्रथा फौरन बंद हो। कुछ प्रांतों में यह प्रथा भयंकर रोग का रुप धारण कर रही है। शराबखोरी की बुरी आदत कुर्मि–क्षत्रिय जाति में अति निंदनीय मानी जाए। शराब से मनुष्य पशु बन कर अंधा हो जाता है और माता और बहिन का भी भेद भूल कर पशुवत आचरण करता है। हमारी इस महान जाति के सदस्यों को कृषकोचित शरीर श्रम के द्वारा रोजी–रोटी कमाने में हीनता का बोध नहीं होना चाहिये। हमें ऐसे गंदे धंधे नहीं करना चाहिये जिनसे हम में और हमारे बच्चों में हीनता और दीनता का भाव घर कर जाए। जो लोग आर्थिक दुरावस्था के कारण हम से कम भाग्यशाली हों उन्हें अधिक सम्पन्न और सामर्थ्यवान बंधु मदद कर स्वजातीय प्रतिष्ठा और गौरव के अनुकूल जीविका उपार्जन में, संबद्ध होकर सहायता पहुंचा दें।"[9]

निष्कर्ष

इस प्रकार डॉ. खूबचंद बघेल एक महान समाज सुधारक थे, जिन्होंने शिक्षा, समानता, स्वावलंबन और संस्कृति के माध्यम से समाज को नई दिशा दी। उनकी विचारधारा ने न केवल छत्तीसगढ़, बल्कि समूचे भारत में सामाजिक चेतना का संचार किया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्चा सुधार वही है जो समाज के सबसे कमजोर वर्ग तक पहुँचे। आज बघेल जी के प्रयास सफल हुए। सामाजिक असमानता में कमी आई है।

संदर्भ सूची

1. कोशले, सूरज. छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक घटनाएँ एवं राजनीतिक आंदोलन, ई पुस्तक, 2025, पृ.17.
2. https://www.cgnewshindi.in/2020/07/dr–khubchand–baghel–life–history.html, 10–11–2025, 10:00.
3. वर्मा, परदेशीराम. डॉ. खूबचंद बघेल व्यक्ति एवं विचार, रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2007, पृ. 15.
4. वर्मा, परदेशीराम. डॉ. खूबचंद बघेल व्यक्ति एवं विचार, रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2007, पृ. 15–16
5. शर्मा, महेश दत्त. छत्तीसगढ़ की महान विभूतियाँ, नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2022, पृ. 1.
6. https://www.cgnewshindi.in/2020/07/dr–khubchand–baghel–life–history.html, 10–11–2025, 11:00.
7. वर्मा, परदेशीराम. डॉ. खूबचंद बघेल व्यक्ति एवं विचार, रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2007, पृ. 80.
8. वर्मा, परदेशीराम. डॉ. खूबचंद बघेल व्यक्ति एवं विचार, रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2007, पृ. 81.
9. वर्मा, परदेशीराम. डॉ. खूबचंद बघेल व्यक्ति एवं विचार, रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2007, पृ. 67.